न्यारापन २०

१

ब्राह्मण बने, बाप के वर्से के अधिकारी बने, गॉडली स्टूडेन्ट बनें, ज्ञानी तू आत्मा बने, विश्व सेवाधारी बने–यह भाग्य तो पा लिया लेकिन अब पास विद् आनॅर होने के लिए, कर्मातीत स्थिति के समीप जाने के लिए ब्रह्मा बाप समान न्यारे अशरीरी बनने के अभ्यास पर विशेष अटेन्शन। जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। जो सभी बच्चे अनुभव सुनाते हो–सुनते हुए न्यारे, कार्य करते हुए न्यारे, बोलते हुए न्यारे रहते थे। सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की। न्यारापन हर कर्म में सफलता सहज अनुभव कराता है। करके देखो। एक घण्टा किसको समझाने की भी मेहनत करके देखो और उसके अन्तर में १५ मिनट में सुनते हुए, बोलते हुए

न्यारेपन की स्थिति में स्थित होके दूसरी आत्मा को भी न्यारेपन की स्थिति का वायब्रेशन देकर देखो। जो १५ मिनट में सफलता होगी वह एक घण्टे में नहीं होगी। यही प्रैक्टिस ब्रह्मा बाप ने करके दिखाई। तो समझा क्या करना है!

२

टेन्शन रखने में तो आदती हो गये ना। अटेन्शन का भी टेन्शन नहीं रखो लेकिन नेचुरल अटेन्शन हो। कई ऐसा भी करते हैं –अटेन्शन को टेन्शन में बदल देते, इसलिए होता है। अटेन्शन को अटेन्शन के रूप में करो, बदली नहीं करो। ओरीज्नल अभ्यास आत्मा को न्यारे होने का है। न्यारी थी, न्यारी है, फिर न्यारी बनेगी। सिर्फ अटैचमेंट न्यारा बनने नहीं देता है। वैसे आत्मा की ओरीज्नल नेचर शरीर से न्यारे रहने की है, अलग है। शरीर आत्मा नहीं, आत्मा शरीर नहीं। तो न्यारे हुए ना। सिर्फ ६३ जन्मों से अटैचमेंट की आदत पड़ गई है। ओरीज्नल तो ओरीज्नल ही होता है।

३

हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता, सदा सुकर्म होगा। त्रिकालदर्शी न बनने के कारण ही व्यर्थ कर्म वा पाप कर्म होते हैं। ऐसे ही साक्षी दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे। कर्म का फल श्रेष्ठ होने के कारण कर्म सम्बन्ध में आवेंगे, बन्धन में नहीं। सदा कर्म करते हुए भी न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करेंगे ऐसी न्यारी और प्यारी आत्मायें अभी भी अनेक आत्माओं के सामने दृष्टान्त अर्थात् एक्जै-म्पुल बनते हैं – जिसको देखकर अनेक आत्मायें स्वयं भी कर्मयोगी बन जाती हैं और भविष्य में भी पूज्यनीय बन जाती हैं। ऐसे बाप समान बने हो ? बन्धन मुक्त आत्मा बने हो ? सव्र सम्बन्ध बाप के साथ जोड़ना अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त होना। अनेक जन्मों के अनेक प्रकार के बन्धन को समाप्त करने का सहज साधन बाप से सर्व सम्बन्ध। अगर किसी भी प्रकार का बन्धन अनुभव करते हो तो उसका कारण है सम्बन्ध नहीं। बाप-दादा रिज़ल्ट देख रहे थे कि अभी तक कौन-कौन से बन्धन युक्त हैं। देह के बन्धन का कारण है देही का सम्बन्ध बाप से नहीं जोड़ा है। बाप की स्मृति और देही स्वरूप के स्मृति की धारणा नहीं हुई

है। पहला पाठ कच्चा है। सेकेण्ड में देह से न्यारे बनने का अभ्यास सेकेण्ड में देह के बन्धन से मुक्त बना देता है। स्वीच आन हुआ और भसम।

४

अपने को इस पुरानी दुनिया में रहते कमल पुष्प के समान न्यारे और अति बाप के प्यारे अनुभव करते हो? जैसे कमल का पुष्प कीचड़ में रहते भी न्यारा रहता है, ऐसे पुरानी दुनिया में रहते हुए, तमोगुणी वातावरण से न्यारे रहते हो? तमोगुणी वातावरण का प्रभाव तो नहीं पड़ता। जो सदा बाप को अपना साथी बनाते और साक्षी हो पार्ट बजाते वह सदा न्यारे होंगे। जैसे वाटरप्रुफ होता है ना तो कितना भी पानी पड़े लेकिन एक बूँद भी असर नहीं करेंगी। ऐसे सदा मायाप्रुफ हो कि माया का असर होता है? जब बाप के साथ का किनारा करते हो तब असर होता है। किनारा देख माया अपना वार कर देती हैं। सदा साथ रहो तो माया का वार नहीं हो सकता। सभी बच्चों को मायाजीत बनने का वरदान है लेकिन मायाजीत का पेपर तो होगा ना! पास नहीं होंगे तो पास विद ऑनर कैसे कहलायेंगे। सदा यह याद रखो कि हम सर्वशक्तिवान के साथ हैं।

अगर कोई बहादुर का साथ होता है तो कितना निर्भय रहते हैं, यह तो सर्वशकतिवान का साथ है तो कितना निर्भय रहना चाहिए। सदा अपने भाग्य का का वर्णन कर रहे हैं, तो अपने भाग्य का सितारा देखते रहो।

५

आपके रूप से बाप दिखाई देता है इसलिए बाप के रूप कह देते हैं। जो बाप के सदा साथ रहने वाले हैं उनकी यही विशेषता होगी, उनको देखकर बाप याद आयेगा, उनको नहीं याद करेंगे लेकिन बाप को याद करेंगे। उन्हों से बाप के चरित्र, बाप की दृष्टि, बाप के कर्म सब अनुभव होंगे। वह स्वयं नहीं दिखाई देंगे लेकिन उन द्वारा बाप के कर्म वा दृष्टि अनु- भव होगी। यही विशेषता है अनन्य, समान बच्चें की। सभी ऐसे हो ना! आप में तो नहीं फँसते हैं ना! यह तो नहीं कहते फलानी बहुत अच्छी है, नहीं। बाप ने इन्हें अच्छा बनाया है। बाप की दृष्टि, बाप की पालना इन्हों से मिलती है। बाप के महावाक्य इन्हों से सुनते हैं। यह विशेषता है। इसको कहा जाता है प्यारा भी लेकिन न्यारा भी। प्यारा भले सबका हो लेकिन फँसानेवाला नहीं हो। बाप के बदले आपको याद न करें। बाप की

शक्ति लेने के लिए बाप के महावाक्य सुनने के लिए आपको याद करें। इसको कहते हैं प्यारा भी और न्यारा भी। ऐसा ग्रुप है ना।

६

शरीर की प्रवृत्ति, लौकिक प्रवृत्ति, सेवा की प्रवृत्ति, अपने रहे हुए कमजोरी के संकल्प की और संस्कार प्रवृत्ति, सर्व प्रकार की प्रवृत्तियों से न्यारे और बाप के साथ चलने वाले प्यारे बन सकते हो? वा कोई प्रवृत्ति अपने तरफ आकर्षित करेगी? सब तरफ से सर्व प्रवृत्तियों का किनारा छोड़ चुके हो वा कोई भी किनारा अल्पकाल का सहारा बन बाप के सहारे वा साथ से दूर कर देंगे? संकल्प किया कि जाना है, डायरेक्शन मिला अब चलना है तो डबल लाइट कि उड़न आसन पर स्थित हो उड़ जायेंगे? ऐसी तैयारी है? वा सोचेंगे कि अभी यह करना है, वह करना है?

७

सेवा के साधन भी भल अपनाओ। नये-नये प्लैन भी भले बनाओ। लेकिन किनारों में रस्सी बांधकर छोड़ नहीं देना। प्रवृत्ति में आते कमल बनना भूल न जाना। वापिस जाने की तैयारी नहीं भूल जाना।

सदा अपनी अन्तिम स्थिति का वाहन - न्यारे और प्यारे बनने का श्रेष्ठ साधन सेवा के साधनों में भूल नहीं जाना। खूब सेवा करो लेकिन न्यारेपन की खूबी को नहीं छोड़ना। अभी इसी अभ्यास की आवश्यकता है। या तो बिल्कुल प्यारे हो जाते या तो बिल्कुल प्यारे हो जाते। इसलिए न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स रखो। सेवा करो लेकिन मेरेपन से न्यारे होकर करो। समझा क्या करना है? अब नई-नई रस्सियाँ भी तैयार कर रहे हैं। पुरानी टूट रही हैं। समझते भी नई रस्सियाँ बांध रहे हैं क्योंकि चमकीली रस्सियाँ हैं। तो इस वर्ष क्या करना है? बापदादा साक्षी होकर के बच्चों का खेल देते हैं। रस्सियों के बधने की रेस में एक दो से बहुत आगे जा रहे हैं। इसलिए सदा विस्तार में जाते सार रुप में रहो।

८

'और संग तोड़ एक संग जोड़ो' यह कहावत क्यों प्रसिद्ध हैं? क्योंकि एक बाप का प्यारा बनने के लिए सर्व से न्यारा बनना पड़ता है। जब एक में सर्व सम्बन्धों की प्राप्ति हो जाती है तो सहज ही सर्व से किनारा हो जाता। तो सर्व से तोड़ना और एक से जोड़ना आपके लिए सहज है। क्योंकि एक द्वारा सर्व प्राप्ति होने से अप्राप्त कोई

वस्तु नहीं रहती जिस तरफ बुद्धि भटके। पहले प्यार मिलता है फिर न्यारे होते – इसलिए भी सहज है। तो सबसे न्यारा और बाप का प्यारा, इसी को ही कमल पुष्प समान कहा जाता है। तो चेक करो कमल पुष्प समान हैं, कीचड़ के छींटे तो नहीं पड़ते ?

९

ये अव्यक्त वाणियां इस संसार के विवाद तथा इसके माया मोह से सदा ऊपर हरेन वाले आनन्द स्वरुप, शान्ति स्वरुप एवं प्रेम स्वरुप पमरपिता परमात्मा और साथ-साथ अव्यक्त प्रजापिता ब्रह्मा की वाणियां हैं, इसलिए इन्हें पढ़ते समय आपको इन में विशेष मधुरता, परमात्मीय प्रेम और आनन्द का भी अनुभव होगा। परन्तु ये विशेष लाभ उन्हें ही होगा जो स्वयं देह से न्यारे होकर अर्थात् अव्यक्त स्थिति में रहकर उनका अध्ययन करेंगे और जो आत्मा, परमात्मा, सृष्टि चक्र गति इत्यादि के बारे में परमपिता परमात्मा शिव द्वारा उद्घाटित रहस्यों को समझ चुक हौ ऐसे प्रभु-वत्स इन्हें पढ़ते समय एक अद्भुत आत्मिक सुख अनुभव करेंगे और उन्हें महसूस होगा कि उनमें एक अलौकिक शक्ति का संचार हो रहा है।